"Group - A"

ऐच्छिक

प्र० व्यक्तिगत संपत्ति क्या है ? इसके गुणों और दोषों का वर्णन करें ?

उत्तर : Property (संपत्ति) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के "Proprietas" शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है "अपना" या "स्वयं" अर्थात "निजी"। जो व्यक्ति के अधिकार में हो या स्वयं का हो वही सम्पत्ति संपत्ति है। विशेष रूप व्यक्ति का स्वामित्व या पूर्ण अधिकार होता है, वही संपत्ति कहलाती है। संपत्ति का संबंध व्यक्ति से है। संपत्ति व्यक्तित्व स्थापना तथा उसका उपयोग का आधार है। तथा व्यक्तिगत [illegible] [illegible] रूप से आवश्यक होते ही व्यक्ति निजी रूप विरोध रूप से [illegible] समाज में व्याप्त रहे हैं। व्यक्तिगत संपत्ति के संबंध में कई विचार चले आते हैं। [illegible] कुछ सिद्धांत जो इस प्रकार है,

* व्यक्तित्ववादी सिद्धांत

: इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को काम करने। संपत्ति के उपार्जन करने तथा उपभोग करने का पूर्ण स्वतंत्रता है। क्योंकि यह उसकी पूर्ण स्वतंत्रता है, जिससे वह अपना विकास कर सके।

* अधिकार सिद्धान्त
इस विचार के अनुसार मनुष्य को सम्पत्ति का अधिकार है। तथा इस अधिकार से ही स्वामित्व और उपभोग का अधिकार जुड़ा हुआ है। इस संबंध में Rousseau ने तीन तरह की शर्तों का उल्लेख किया है।

- जमीन पर किसी का अधिकार नहीं होना चाहिए।
- सम्पत्ति उतनी ही हो जितनी जीवन के लिए आवश्यक है।
- यह अधिकार वास्तविक श्रम के द्वारा हासिल होना चाहिए।

* आदर्शवादी सिद्धान्त :
कुछ विचारक सम्पत्ति को मनुष्य के आत्मविकास के लिए आवश्यक मानते हैं। आत्मपूर्णता मनुष्य के जीवन का चरमलक्ष्य है तथा बिना सम्पत्ति के आत्म विकास सम्भव नहीं है। अतः वैयक्तिक सम्पत्ति आवश्यक है।

* साम्यवादी सिद्धान्त :
:- इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जीने का और समान स्तर का अधिकार है। तथा इसके अनुसार उत्पादन के साधनों तथा वस्तुओं के वितरण पर व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं

होना चाहिए बल्कि समाज का अधिकार होना चाहिए। इस विचारधारा के अनुसार वैयक्तिक सम्पत्ति को समाप्त कर देना चाहिए तथा सम्पत्ति का सामाजिकरण कर देना चाहिए।

वैयक्तिक सम्पत्ति के संबंध में वर्तमान युग में दो प्रकार की विचारधाराएं हैं। एक जो वैयक्तिक सम्पत्ति को आवश्यक और उचित मानती हैं। और दूसरा जो वैयक्तिक सम्पत्ति को अनावश्यक और अनुचित बताते हुए उसका उन्मूलन चाहती हैं। पहली विचारधारा के अनुसार वैयक्तिक सम्पत्ति के आवश्यक और उचित हैं तथा इसके निम्नलिखित गुण हैं :-

- मनुष्य की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सम्पत्ति आवश्यक हैं। तथा यह मनुष्य के आत्मविकास का साधन है। निजी सम्पत्ति से अधिक से अधिक श्रम करने की प्रेरणा मिलती है जिससे उत्पादन बढ़ता है तथा समाज को लाभ होता हैं।

- निजी सम्पत्ति व्यक्ति की स्वतंत्रता देती है। इससे जीवन मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ,

साथ भविष्य कि चिन्ताओं से मुक्त हो जाता है।

- मनुष्य में अर्जन प्रवृति स्वाभाविक है। यह मूलवृत्ति है, जो चींटियों, पक्षी तथा अन्य पशुओं में भी पायी जाती है। अपनी योग्यता के पुरस्कार स्वरूप अर्जन का विचार मनुष्य को संतोष प्रदान करता है।

- सम्पत्ति से कुछ सामाजिक सद्गुणों का भी विकास होता है, जैसे प्रेम, दया, स्फूर्ति इत्यादि ये सद्गुण व्यक्तिगत तथा श्रेष्ठ सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक हैं। अतः वैयक्तिक सम्पत्ति मनुष्य के लिए आवश्यक और उचित है। क्योंकि यह मनुष्य के स्वभाव की उपज है।

वैयक्तिक सम्पत्ति के दोष :

वैयक्तिक सम्पत्ति के उन्मूलन के औचित्य को सिद्ध करने के लिए इसके निम्नलिखित दोष बतलाये जाते हैं :

- सम्पत्ति मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है होती है। किन्तु अधिकतर ऐसा देखा जाता है कि सम्पत्ति जीवन के मनोरंजन

तथा आलस्य का साधन बन जाती है।
सम्पत्ति आत्म विकास का साधन है
किन्तु वैयक्तिक सम्पत्ति बढ़ाना ही
जीवन का उद्देश्य बन जाता है।
तथा सम्पत्ति का दुरुपयोग होने
लगता है।

- निजी सम्पत्ति श्रम के लिए प्रेरणा है, किन्तु यह श्रम समाज के लिए तभी शुभ होगा जब यह समाज कल्याण के लिए हो। इसके अतिरिक्त विरासत में प्राप्त वैयक्तिक सम्पत्ति श्रम की प्रेरणा नहीं देती बल्कि वह श्रम के लिए बाधक हो जाती है।

- वैयक्तिक सम्पत्ति सुरक्षा की भावना उत्पन्न करने में सहायक है। किन्तु यदि समाज या राज्य व्यक्तियों कि सुरक्षा का दायित्व ले ले जैसे बच्चों कि शिक्षा, बिमारी का उपचार, बुढ़ापे की सुरक्षा तो वैयक्तिक सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं रह जाती।

- वैयक्तिक सम्पत्ति व्यक्ति कि योग्यता का पुरस्कार अवश्य है किन्तु योग्यता ऐसी होनी चाहिए जिससे समाज को लाभ हो।

- वैयक्तिक सम्पत्ति कुछ सामाजिक सद्गुणों को विकसित करती है किन्तु वैयक्तिक

सम्पत्ति और सद्गुणों में कोई आवश्यक संबंध नहीं है। वे सद्गुण वैसे व्यक्तियों में भी होते हैं जिनके वैयक्तिक सम्पत्ति नहीं होती।

• वैयक्तिक सम्पत्ति का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह शोषण पर आधारित है तथा पूँजीवाद को जन्म देती है। वैयक्तिक सम्पत्ति समाज में आर्थिक विषमता उत्पन्न करती है। यह विषमता समाज में शोषण उत्पन्न करती है। इस व्यवस्था में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से आर्थिक दृष्टि से अधिक संपन्न हो जाता है तथा समाज में दो भिन्न आर्थिक वर्ग हो जाते हैं 'धनी' और 'निर्धन'। 'धनी' पूँजी का स्वामी हो जाता है, जिस पर श्रमिकों का अधिकार नहीं होता। इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विषमता आ जाती है तथा सामाजिक न्याय नहीं हो पाता।

इस प्रकार वैयक्तिक सम्पत्ति के औचित्य तथा अनौचित्य के संबंध में तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं। वस्तुतः सम्पत्ति मनुष्य के स्वभाव का उपज है तथा यह व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। मानव ही [illegible] एक जीवन के लिए उतनी ही सम्पत्ति आवश्यक है, जिससे उसकी आवश्यकताओं की

पूर्ति हो सके। अतः वैयक्तिक सम्पत्ति में दोष नहीं है यदि इससे संबंधित अधिकार और कर्तव्य का पालन किया जा सके।

—— X ——